يَوْمِ الْبَعْثِ٘ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَ لٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۶﴾

उठने के दिन तक तो येह है वोह दिन उठने का[124] लेकिन तुम न जानते थे[125]

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَ لَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۵۷﴾

तो उस दिन ज़ालिमों को नफ़्अ़ न देगी उन की मा'ज़िरत और न उन से कोई राज़ी करना मांगे[126]

وَ لَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَ لَئِنْ جِئْتَهُمْ

और बेशक हम ने लोगों के लिये इस कुरआन में हर क़िस्म की मिसाल बयान फ़रमाई[127] और अगर तुम इन के पास कोई

بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿۵۸﴾ كَذٰلِكَ

निशानी लाओ तो ज़रूर काफ़िर कहेंगे तुम तो नहीं मगर बातिल पर यूं ही

يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۵۹﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

मोहर कर देता है अल्लाह जाहिलों के दिलों पर[128] तो सब्र करो[129] बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है[130]

وَّ لَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿۶۰﴾ ع

और तुम्हें सबुक न कर दें वोह जो यक़ीन नहीं रखते[131]

ايَاتُهَا ۳۴ سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ ۵۷ ۳۱ رُكُوْعَاتُهَا ۴

सूरए लुक़्मान मक्किय्या है, इस में चोंतीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

الٓمّٓ ﴿۱﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿۲﴾ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳﴾

येह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं हिदायत और रह़मत हैं नेकों के लिये

124 : जिस के तुम दुन्या में मुन्किर थे **125 :** दुन्या में कि वोह ह़क़ है ज़रूर वाक़ेअ़ होगा, अब तुम ने जाना कि वोह दिन आ गया और उस का आना ह़क़ था तो उस वक़्त का जानना तुम्हें नफ़्अ़ न देगा जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **126 :** या'नी न उन से येह कहा जाए कि तौबा कर के अपने रब को राज़ी करो जैसा कि दुन्या में उन से तौबा त़लब की जाती थी। **127 :** ताकि उन्हें तम्बीह हो और इन्ज़ार अपने कमाल को पहुंचे, लेकिन उन्हों ने अपनी सियाह बात़िनी और सख़्त दिली के बाइ़स कुछ भी फ़ाएदा न उठाया, बल्कि जब कोई आयते कुरआन आई उस को झुटला दिया और उस का इन्कार किया। **128 :** जिन्हें जानता है कि वोह गुमराही इख़्तियार करेंगे और ह़क़ वालों को बात़िल पर बताएंगे। **129 :** उन की ईज़ा व अ़दावत पर **130 :** आप की मदद फ़रमाने का और दीने इस्लाम को तमाम दीनों पर ग़ालिब करने का। **131 :** या'नी येह लोग जिन्हें आख़िरत का यक़ीन नहीं है और बअ़्स व ह़िसाब के मुन्किर हैं उन की शिद्दतें और उन के इन्कार और उन की ना लाइक़ ह़रकात आप के लिये तै़श और क़लक़ (रन्जिश) का बाइ़स न हों और ऐसा न हो कि आप उन के ह़क़ में अ़ज़ाब की दुआ़ करने में जल्दी फ़रमाएं। **1 :** सूरए लुक़्मान मक्किय्या है सिवाए दो आयतों के जो ''وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ'' से शुरूअ़ होती हैं। इस सूरत में चार रुकूअ़, चोंतीस आयतें, पांच सो अड़तालीस कलिमे, दो हज़ार एक सो दस हर्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

वोह जो नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें और आख़िरत पर

یُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓىٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

यक़ीन लाएं वोही अपने रब की हिदायत पर हैं और उन्हीं का काम बना

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یَّشْتَرِیْ لَهْوَ الْحَدِیْثِ لِیُضِلَّ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ

और कुछ लोग खेल की बात ख़रीदते हैं[2] कि **अल्लाह** की राह से बहका दें

بِغَیْرِ عِلْمٍ ۖۗ وَّ یَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ ﴿۶﴾ وَ اِذَا

बे समझे[3] और उसे हंसी बना लें उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है और जब

تُتْلٰى عَلَیْهِ اٰیٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ یَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِیْۤ اُذُنَیْهِ وَقْرًا ۚ

उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो तकब्बुर करता हुवा फिरे[4] जैसे उन्हें सुना ही नहीं जैसे उस के कानों में टेंट (रूई) है[5]

فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۷﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

तो उसे दर्दनाक अ़ज़ाब का मुज़्दा दो बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये

جَنّٰتُ النَّعِیْمِ ﴿۸﴾ۙ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ

चैन के बाग़ हैं हमेशा उन में रहेंगे **अल्लाह** का वा'दा है सच्चा और वोही इ़ज़्ज़त व

الْحَكِیْمُ ﴿۹﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَ اَلْقٰى فِی الْاَرْضِ

हिक्मत वाला है उस ने आस्मान बनाए बे ऐसे सुतूनों के जो तुम्हें नज़र आएं[6] और ज़मीन में डाले

رَوَاسِیَ اَنْ تَمِیْدَ بِكُمْ وَ بَثَّ فِیْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ

लंगर[7] कि तुम्हें ले कर न कांपे और इस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हम ने आस्मान

2 : लह्व या'नी खेल हर उस बातिल को कहते हैं जो आदमी को नेकी से और काम की बातों से ग़फ़्लत में डाले कहानियां, अफ़्साने इसी में दाख़िल हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस बिन कल्दा के ह़क़ में नाज़िल हुई जो तिजारत के सिल्सिले में दूसरे मुल्कों में सफ़र किया करता था, उस ने अ़जमियों की किताबें ख़रीदीं जिन में क़िस्से कहानियां थीं, वोह क़ुरैश को सुनाता और कहता कि सय्यिदे काएनात (मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَسَلَّم) तुम्हें आ़द व समूद के वाक़िआ़त सुनाते हैं और मैं रुस्तम व इस्फ़न्दियार और शाहाने फ़ारस की कहानियां सुनाता हूं। कुछ लोग उन कहानियों में मश्ग़ूल हो गए और क़ुरआने पाक सुनने से रह गए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **3 :** या'नी बराहे जहालत लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने और क़ुरआने करीम सुनने से रोकें और आयाते इलाहिय्यह के साथ तमस्ख़ुर करें **4 :** और उन की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करे **5 :** और वोह बहरा है **6 :** या'नी कोई सुतून नहीं है, तुम्हारी नज़र ख़ुद इस की शाहिद है। **7 :** बुलन्द पहाड़ों के।

www.dawateislami.net

السَّمَآءِ مَآءً فَاَنۡۢبَتۡنَا فِیۡهَا مِنۡ كُلِّ زَوۡجٍ كَرِیۡمٍ ﴿۱۰﴾ هٰذَا خَلۡقُ اللّٰهِ

से पानी उतारा[8] तो ज़मीन में हर नफ़ीस जोड़ा उगाया[9] येह तो अल्लाह का बनाया हुवा है[10]

فَاَرُوۡنِیۡ مَاذَا خَلَقَ الَّذِیۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوۡنَ فِیۡ ضَلٰلٍ

मुझे वोह दिखाओ[11] जो उस के सिवा औरों ने बनाया[12] बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही

مُّبِیۡنٍ ﴿۱۱﴾ وَلَقَدۡ اٰتَیۡنَا لُقۡمٰنَ الۡحِكۡمَةَ اَنِ اشۡكُرۡ لِلّٰهِ ؕ وَمَنۡ یَّشۡكُرۡ ع ۱۰

में हैं और बेशक हम ने लुक़्मान को हिक्मत अ़ता फ़रमाई[13] कि अल्लाह का शुक्र कर[14] और जो शुक्र करे

فَاِنَّمَا یَشۡكُرُ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ حَمِیۡدٌ ﴿۱۲﴾ وَاِذۡ قَالَ

वोह अपने भले को शुक्र करता है[15] और जो नाशुक्री करे तो बेशक अल्लाह बे परवा है सब ख़ूबियों सराहा और याद करो जब

لُقۡمٰنُ لِابۡنِهٖ وَهُوَ یَعِظُهٗ یٰبُنَیَّ لَا تُشۡرِكۡ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرۡكَ لَظُلۡمٌ وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

लुक़्मान ने अपने बेटे से कहा और वोह नसीहत करता था[16] ऐ मेरे बेटे अल्लाह का किसी को शरीक न करना बेशक शिर्क बड़ा

عَظِیۡمٌ ﴿۱۳﴾ وَوَصَّیۡنَا الۡاِنۡسَانَ بِوَالِدَیۡهِ ۚ حَمَلَتۡهُ اُمُّهٗ وَهۡنًا عَلٰی وَهۡنٍ

ज़ुल्म है[17] और हम ने आदमी को उस के मां बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई[18] उस की मां ने उसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई[19]

وَّفِصٰلُهٗ فِیۡ عَامَیۡنِ اَنِ اشۡكُرۡ لِیۡ وَلِوَالِدَیۡكَ ؕ اِلَیَّ الۡمَصِیۡرُ ﴿۱۴﴾ وَاِنۡ النصف

और उस का दूध छूटना दो बरस में है येह कि हक़ मान मेरा और अपने मां बाप का[20] आख़िर मुझी तक आना है और अगर

8 : अपने फ़ज़्ल से बारिश की **9 :** उम्दा अक़्साम के नबातात पैदा किये। **10 :** जो तुम देख रहे हो। **11 :** ऐ मुश्रिको ! **12 :** या'नी बुतों ने जिन्हें तुम मुस्तहिक़े इबादत क़रार देते हो। **13 :** मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि लुक़्मान का नसब येह है : लुक़्मान बिन बाऊर बिन नाहूर बिन तारिख़। वहब का क़ौल है कि हज़रते लुक़्मान, हज़रते अय्यूब عَلَيۡهِ السَّلَام के भान्जे थे। मुक़ातिल ने कहा कि हज़रते अय्यूब عَلَيۡهِ السَّلَام की ख़ाला के फ़रज़न्द थे। वाक़िदी ने कहा कि बनी इसराईल में क़ाज़ी थे और येह भी कहा गया है कि आप हज़ार साल ज़िन्दा रहे और हज़रते दावूद عَلَيۡهِ السَّلَام का ज़माना पाया और इन से इल्म अख़्ज़ किया और इन के ज़माने में फ़तवा देना तर्क कर दिया अगर्चे पहले से फ़तवा देते थे, आप की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है, अक्सर उ़लमा इसी की त़रफ़ हैं कि आप हकीम थे नबी न थे। हिक्मत अ़क़्लो फ़ह्म को कहते हैं और कहा गया है कि हिक्मत वोह इल्म है जिस के मुताबिक़ अ़मल किया जाए। बा'ज़ ने कहा कि "हिक्मत" मा'रिफ़त और इसाबत फ़िल उमूर को कहते हैं और येह भी कहा गया है कि हिक्मत ऐसी शै है कि अल्लाह तआ़ला इस को जिस के दिल में रखता है उस के दिल को रोशन कर देती है। **14 :** इस ने'मत पर कि अल्लाह तआ़ला ने हिक्मत अ़ता की। **15 :** क्यूं कि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है और सवाब मिलता है। **16 :** हज़रते लुक़्मान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيۡهِ السَّلَام के उन साहिब ज़ादे का नाम अन्अ़म या अश्कम था और इन्सान का आ'ला मर्तबा येह है कि वोह ख़ुद कामिल हो और दूसरे की तक्मील करे तो हज़रते लुक़्मान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيۡهِ السَّلَام का कामिल होना तो "اٰتَیۡنَا لُقۡمٰنَ الۡحِكۡمَةَ" में बयान फ़रमा दिया और दूसरे की तक्मील करना "وَهُوَ یَعِظُهٗ" से ज़ाहिर फ़रमाया और नसीहत बेटे को की। इस से मा'लूम हुवा कि नसीहत में घर वालों और क़रीब तर लोगों को मुक़द्दम करना चाहिये और नसीहत की इब्तिदा मन्ए शिर्क से फ़रमाई। इस से मा'लूम हुवा कि येह निहायत अहम है। **17 :** क्यूं कि इस में ग़ैर मुस्तहिक़े इबादत को मुस्तहिक़े इबादत के बराबर क़रार देना है और इबादत को उस के महल के ख़िलाफ़ रखना येह दोनों बातें ज़ुल्मे अ़ज़ीम हैं। **18 :** कि उन का फ़रमां बरदार रहे और उन के साथ नेक सुलूक करे (जैसा कि इसी आयत में आगे इर्शाद है) **19 :** या'नी इस का ज़ो'फ़ दम ब दम तरक़्क़ी पर होता है जितना हम्ल बढ़ता जाता है बार ज़ियादा होता है और ज़ो'फ़ तरक़्क़ी करता है, औ़रत को हामिला होने के बा'द ज़ो'फ़ और तअ़ब और मशक़्क़तें पहुंचती रहती हैं, हम्ल ख़ुद ज़ईफ़ करने वाला है, दर्दे ज़ेह ज़ो'फ़ पर ज़ो'फ़ है और

جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَ

वोह दोनों तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहराए ऐसी चीज़ को जिस का तुझे इल्म नहीं[21] तो उन का कहना न मान[22] और

صَاحِبْهُمَا فِی الدُّنْیَا مَعْرُوْفًا٘ وَّ اتَّبِـعْ سَبِیْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَیَّۚ ثُمَّ اِلَیَّ

दुन्या में अच्छी त़रह़ उन का साथ दे[23] और उस की राह चल जो मेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया[24] फिर मेरी ही

مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾ یٰبُنَیَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ

त़रफ़ तुम्हें फिर आना है तो मैं बता दूंगा जो तुम करते थे[25] ऐ मेरे बेटे बुराई अगर राई

حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِیْ صَخْرَةٍ اَوْ فِی السَّمٰوٰتِ اَوْ فِی الْاَرْضِ

के दाने बराबर हो फिर वोह पथ्थर की चटान में या आस्मानों में या ज़मीन में कहीं हो[26]

یَاْتِ بِهَا اللّٰهُؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِیْفٌ خَبِیْرٌ ﴿۱۶﴾ یٰبُنَیَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَ اْمُرْ

अल्लाह उसे ले आएगा[27] बेशक अल्लाह हर बारीकी का जानने वाला ख़बरदार है[28] ऐ मेरे बेटे नमाज़ बरपा रख और अच्छी

بِالْمَعْرُوْفِ وَ انْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ اصْبِرْ عَلٰى مَاۤ اَصَابَكَؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ

बात का हुक्म दे और बुरी बात से मन्अ़ कर और जो उफ़्ताद (मुसीबत) तुझ पर पड़े[29] उस पर सब्र कर बेशक येह

عَزْمِ الْاُمُوْرِۚ ﴿۱۷﴾ وَ لَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَ لَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ

हिम्मत के काम हैं[30] और किसी से बात करने में[31] अपना रुख़्सारा कज न कर[32] और ज़मीन में इतराता

वज़्अ़ (बच्चा जनना) इस पर और मज़ीद शिद्दत है, दूध पिलाना इन सब पर मज़ीद बरआं है। **20 :** येह वोह ताकीद है जिस का ज़िक्र ऊपर फ़रमाया था। सुफ़्यान बिन उ़यैना ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि जिस ने पन्जगाना नमाज़ें अदा कीं वोह अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाया और जिस ने पन्जगाना नमाज़ों के बा'द वालिदैन के लिये दुआ़एं कीं उस ने वालिदैन की शुक्र गुज़ारी की। **21 :** या'नी इल्म से तो किसी को मेरा शरीक ठहरा ही नहीं सकते क्यूं कि मेरा शरीक मुह़ाल है हो ही नहीं सकता, अब जो कोई भी कहेगा तो बे इल्मी ही से किसी चीज़ के शरीक ठहराने को कहेगा, ऐसा अगर मां बाप भी कहें **22 :** नख़ई ने कहा कि वालिदैन की त़ाअ़त वाजिब है लेकिन अगर वोह शिर्क का हुक्म करें तो उन की इत़ाअ़त न कर क्यूं कि ख़ालिक़ की ना फ़रमानी करने में किसी मख़्लूक़ की त़ाअ़त रवा नहीं। **23 :** हुस्ने अख़्लाक़ और हुस्ने सुलूक और एह़सान व तह़म्मुल के साथ। **24 :** या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब की राह, इसी को मज़्हबे सुन्नत व जमाअ़त कहते हैं। **25 :** तुम्हारे आ'माल की जज़ा दे कर। ''وَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ'' से यहां तक जो मज़्मून है येह ह़ज़रते लुक़्मान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ السَّلَام का नहीं है बल्कि उन्हों ने अपने साहि़ब ज़ादे को अल्लाह तआ़ला के शुक्रे ने'मत का हुक्म दिया था और शिर्क की मुमानअ़त की थी तो अल्लाह तआ़ला ने वालिदैन की त़ाअ़त और इस का मह़ल इर्शाद फ़रमा दिया, इस के बा'द फिर ह़ज़रते लुक़्मान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ السَّلَام का मक़ूला ज़िक्र किया जाता है कि इन्हों ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : **26 :** कैसी ही पोशीदा जगह हो अल्लाह तआ़ला से नहीं छुप सकती **27 :** रोज़े क़ियामत और उस का ह़िसाब फ़रमाएगा **28 :** या'नी हर सग़ीर व कबीर उस के इह़ात़ए इल्मी में है। **29 :** امربالمعروف ونہی عن المنکر करने से **30 :** इन का करना लाज़िम है। इस आयत से मा'लूम हुवा कि नमाज़ और امربالمعروف और نہی عن المنکر और सब्र बर ईज़ा (तक्लीफ़ पर सब्र करना) येह ऐसी त़ाअ़तें हैं जिन का तमाम उम्मतों में हुक्म था। **31 :** बराहे तकब्बुर **32 :** या'नी जब आदमी बात करें तो उन्हें ह़क़ीर जान कर उन की त़रफ़ से रुख़ फेरना जैसा कि मुतकब्बिरीन का त़रीक़ा है इख़्तियार न करना, ग़नी व फ़क़ीर सब के साथ ब तवाज़ोअ़ पेश आना।

www.dawateislami.net

مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۚ﴿۱۸﴾ وَ اقْصِدْ فِیْ مَشْیِكَ وَ

न चल बेशक **अल्लाह** को नहीं भाता कोई इतराता फ़ख़्र करता और मियाना चाल चल[33] और

اغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِیْرِ ۠﴿۱۹﴾ اَلَمْ ٢ ع ٨ ١١

अपनी आवाज़ कुछ पस्त कर[34] बेशक सब आवाज़ों में बुरी आवाज़, गधे की आवाज़[35] क्या

تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ وَ اَسْبَغَ

तुम ने न देखा कि **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये काम में लगाए जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में हैं[36] और तुम्हें

عَلَیْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ؕ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ

भरपूर दीं अपनी ने'मतें ज़ाहिर और छुपी[37] और बा'ज़े आदमी **अल्लाह** के बारे में झगड़ते हैं यूं कि

بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًی وَّ لَا كِتٰبٍ مُّنِیْرٍ ﴿۲۰﴾ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ

न इल्म न अक़्ल न कोई रोशन किताब[38] और जब उन से कहा जाए उस की पैरवी करो जो

اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ

अल्लाह ने उतारा तो कहते हैं बल्कि हम तो उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया[39] क्या अगर्चे

الشَّیْطٰنُ یَدْعُوْهُمْ اِلٰی عَذَابِ السَّعِیْرِ ﴿۲۱﴾ وَ مَنْ یُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَی

शैत़ान उन को अ़ज़ाबे दोज़ख़ की त़रफ़ बुलाता हो[40] और जो अपना मुंह **अल्लाह** की त़रफ़

---

33 : न बहुत तेज़ न बहुत सुस्त कि येह दोनों बातें मज़्मूम हैं, एक में शाने तकब्बुर है और एक में छिछोरा पन। ह़दीस शरीफ़ में है कि बहुत तेज़ चलना मोमिन का वक़ार खोता है। **34 :** या'नी शोरो शग़ब और चीख़ने चिल्लाने से एह़तिराज़ कर। **35 :** मुद्दआ़ येह है कि शोर मचाना और आवाज़ बुलन्द करना मक्रूह व ना पसन्दीदा है और इस में कुछ फ़ज़ीलत नहीं है, गधे की आवाज़ बा वुजूद बुलन्द होने के मक्रूह और वह़्शत अंगेज़ है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को नर्म आवाज़ से कलाम करना पसन्द था और सख़्त आवाज़ से बोलने को ना पसन्द रखते थे। **36 :** आस्मानों में मिस्ले सूरज चांद तारों के जिन से तुम नफ़्अ़ उठाते हो और ज़मीनों में दरिया, नहरें, कानें, पहाड़, दरख़्त, फल, चौपाए वग़ैरा जिन से तुम फ़ाएदे ह़ासिल करते हो। **37 :** ज़ाहिरी ने'मतों से दुरुस्तिये आ'ज़ा व ह़वासे ख़म्सा ज़ाहिरा और ह़ुस्न व शक्लो सूरत मुराद हैं और बात़िनी ने'मतों से इल्मे मा'रिफ़त व मलकाते फ़ाज़िला वग़ैरा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ने'मते ज़ाहिरा तो इस्लाम व क़ुरआन है और ने'मते बात़िना येह है कि तुम्हारे गुनाहों पर पर्दे डाल दिये, तुम्हारा इफ़्शाए ह़ाल न किया, सज़ा में जल्दी न फ़रमाई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ने'मते ज़ाहिरा दुरुस्तिये आ'ज़ा और ह़ुस्ने सूरत है और ने'मते बात़िना ए'तिक़ादे क़ल्बी। एक क़ौल येह भी है कि ने'मते ज़ाहिरा रिज़्क़ है और बात़िना ह़ुस्ने ख़ुल्क़। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा अह़कामे शरइय्या का हलका होना है और ने'मते बात़िना शफ़ाअ़त। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा इस्लाम का ग़लबा और दुश्मनों पर फ़त्ह़ याब होना है और ने'मते बात़िना मलाएका का इमदाद के लिये आना। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा रसूल का इत्तिबाअ़ है और ने'मते बात़िना इन की मह़ब्बत "رَزَقَنَا اللّٰہُ تَعَالٰی اِتِّبَاعَہٗ وَمَحَبَّتَہٗ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم" **38 :** तो जो कहेंगे जह्ल व नादानी होगा और शाने इलाही में इस त़रह़ की जुर्अत व लब कुशाई निहायत बे जा व गुमराही है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस व उबय बिन ख़लफ़ वग़ैरा कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो बा वुजूद बे इल्म व जाहिल होने के नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात के मुतअ़ल्लिक़ झगड़े किया करते थे। **39 :** या'नी अपने बाप दादा के त़रीक़े ही पर रहेंगे इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : **40 :** जब भी वोह अपने बाप दादा ही की पैरवी किये जाएंगे।

www.dawateislami.net

اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ
झुका दे[41] और हो नेकूकार तो बेशक उस ने मज़बूत गिरह थामी और अल्लाह ही की तरफ़ है सब

الْاُمُوْرِ ﴿۲۲﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ
कामों की इन्तिहा और जो कुफ़्र करे तो तुम[42] उस के कुफ़्र से ग़म न खाओ उन्हें हमारी ही तरफ़ फिरना है हम उन्हें बता देंगे

بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۳﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ
जो करते थे[43] बेशक अल्लाह दिलों की बात जानता है हम उन्हें कुछ बरतने देंगे[44] फिर

نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۲۴﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
उन्हें बेबस कर के सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ ले जाएंगे[45] और अगर तुम उन से पूछो किस ने बनाए आस्मान और

الْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾
ज़मीन तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियां अल्लाह को[46] बल्कि उन में अक्सर जानते नहीं

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ اَنَّ
अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है[47] बेशक अल्लाह ही बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा और अगर

مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ
ज़मीन में जितने पेड़ हैं सब क़लमें हो जाएं और समुन्दर उस की सियाही हो उस के पीछे सात

اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۷﴾ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا
समुन्दर और[48] तो अल्लाह की बातें ख़त्म न होंगी[49] बेशक अल्लाह इ़ज़्ज़तो हिक्मत वाला है तुम सब का पैदा करना और

41 : दीन ख़ालिस उस के लिये क़बूल करे, उस की इबादत में मश्ग़ूल हो, अपने काम उस पर तफ़्वीज़ करे, उसी पर भरोसा रखे **42 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **43 :** या'नी हम उन्हें उन के आ'माल की सज़ा देंगे। **44 :** या'नी थोड़ी मोहलत देंगे कि वोह दुन्या के मज़े उठाएं **45 :** आख़िरत में और वोह दोज़ख़ का अ़ज़ाब है जिस से वोह रिहाई न पाएंगे। **46 :** येह उन के इक़रार पर उन्हें इल्ज़ाम देना है कि जिस ने आस्मान व ज़मीन पैदा किये वोह **अल्लाह** वाहिद لَاشَرِيْکَ لَهٗ है तो वाजिब हुवा कि उस की ह़म्द की जाए। उस का शुक्र अदा किया जाए और उस के सिवा किसी और की इबादत न की जाए। **47 :** सब उस की मम्लूक, मख़्लूक़ और बन्दे हैं तो उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़े इ़बादत नहीं। **48 :** और सारी ख़ल्क़ अल्लाह तआ़ला के कलिमात को लिखे और वोह तमाम क़लम और उन तमाम समुन्दरों की सियाही ख़त्म हो जाए। **49 :** क्यूं कि मा'लूमाते इलाहिय्यह ग़ैर मुतनाही हैं। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हिजरत कर के मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ लाए तो यहूद के उ़लमा व अह़बार ने आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कहा कि हम ने सुना है कि आप फ़रमाते हैं "وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا" या'नी तुम्हें थोड़ा इल्म दिया गया तो इस से आप की मुराद हम लोग हैं या सिर्फ़ अपनी क़ौम ? फ़रमाया : सब मुराद हैं। उन्हों ने कहा : क्या आप की किताब में येह नहीं है कि हमें तौरैत दी गई है, इस में हर शै का इ़ल्म है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि हर शै का इ़ल्म भी इ़ल्मे इलाही के हुज़ूर क़लील है और तुम्हें तो अल्लाह तआ़ला ने इतना इ़ल्म दिया है कि उस पर अ़मल करो तो नफ़्अ़ पाओ। उन्हों ने कहा : आप कैसे येह ख़याल फ़रमाते हैं आप का क़ौल तो येह है कि जिसे ह़िक्मत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई तो इ़ल्मे क़लील और ख़ैरे कसीर कैसे जम्अ़ हो, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई, इस तक़्दीर पर येह आयत मदनी होगी। एक क़ौल येह भी है कि यहूद ने क़ुरैश

www.dawateislami.net

بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ

क़ियामत में उठाना ऐसा ही है जैसा एक जान का[50] बेशक **अल्लाह** सुनता देखता है ऐ सुनने वाले क्या तू ने न देखा कि **अल्लाह**

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ

रात लाता है दिन के हिस्से में और दिन करता है रात के हिस्से में[51] और उस ने सूरज और चांद

الْقَمَرَ ۫ كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّ اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾

काम में लगाए[52] हर एक एक मुक़र्रर मीआद तक चलता है[53] और येह कि **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَ اَنَّ

येह इस लिये कि **अल्लाह** ही हक़ है[54] और उस के सिवा जिन को पूजते हैं सब बातिल हैं[55] और इस लिये कि

اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾ ع اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ

अल्लाह ही बुलन्द बड़ाई वाला है क्या तू ने न देखा कि कश्ती दरिया में चलती है **अल्लाह** के फ़ज़्ल से[56]

اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾ وَ اِذَا

ताकि तुम्हें वोह अपनी[57] कुछ निशानियां दिखाए बेशक इस में निशानियां हैं हर बड़े सब्र करने वाले शुक्र गुज़ार को[58] और जब

غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ

उन पर[59] आ पड़ती है कोई मौज पहाड़ों की त़रह तो **अल्लाह** को पुकारते हैं निरे उसी पर अक़ीदा रखते हुए[60] फिर जब उन्हें ख़ुश्की

اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَ مَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾

की त़रफ़ बचा लाता है तो उन में कोई ए'तिदाल पर रहता है[61] और हमारी आयतों का इन्कार न करेगा मगर हर बड़ा बेवफ़ा नाशुक्रा

से कहा था कि मक्के में जा कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से इस त़रह़ का कलाम करें। एक क़ौल येह है कि मुश्रिकीन ने येह कहा था कि क़ुरआन और जो कुछ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم लाते हैं येह अ़न्क़रीब तमाम हो जाएगा फिर क़िस्सा ख़त्म। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **50 :** **अल्लाह** पर कुछ दुश्वार नहीं, उस की क़ुदरत येह है कि एक कुन से सब को पैदा कर दे। **51 :** या'नी एक को घटा कर दूसरे को बढ़ा कर और जो वक़्त एक में से घटाता है दूसरे में बढ़ा देता है। **52 :** बन्दों के नफ़्अ़ के लिये। **53 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक या अपने अपने अवक़ाते मुअ़य्यना तक, सूरज आख़िरे साल तक और चांद आख़िरे माह तक। **54 :** वोही इन अश्याए मज़्कूरा पर क़ादिर है तो वोही मुस्तह़िक़्क़े इबादत है। **55 :** फ़ना होने वाले उन में से कोई मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं हो सकता। **56 :** उस की रह़मत और उस के एह़सान से **57 :** अ़जाइबे क़ुदरत की **58 :** जो बलाओं पर सब्र करे और **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों का शुक्र गुज़ार हो, सब्रो शुक्र येह दोनों सिफ़तें मोमिन की हैं। **59 :** या'नी कुफ़्फ़ार पर **60 :** और उस के ह़ुज़ूर तज़र्रोअ़ और ज़ारी करते हैं और उसी से दुआ़ व इल्तिजा, उस वक़्त मा सिवा को भूल जाते हैं **61 :** अपने ईमान व इख़्लास पर क़ाइम रहता है, कुफ़्र की त़रफ़ नहीं लौटता। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत इक्रिमा बिन अबी जहल के ह़क़ में नाज़िल हुई, जिस साल मक्कए मुकर्रमा की फ़त्ह़ हुई तो वोह समुन्दर की त़रफ़ भाग गए, वहां बादे मुख़ालिफ़ ने घेरा और ख़त़रे में पड़ गए तो इक्रिमा ने कहा कि अगर **अल्लाह** तआ़ला हमें इस ख़त़रे से नजात दे तो मैं ज़रूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर हाथ में हाथ दे दूंगा या'नी इत़ाअ़त करूंगा। **अल्लाह** तआ़ला ने करम किया, हवा ठहर गई और इक्रिमा मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ आ गए और इस्लाम लाए और बड़ा मुख़्लिसाना इस्लाम लाए और बा'ज़ उन में ऐसे

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَ اخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۫

ऐ लोगो[62] अपने रब से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिस में कोई बाप अपने बच्चे के काम न आएगा

وَ لَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا

और न कोई कामी बच्चा अपने बाप को कुछ नफ़्अ़ दे[63] बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है[64] तो हरगिज़

تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٙ وَ لَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝۳۳ اِنَّ اللّٰهَ

तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी[65] और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हिल्म पर धोका न दे वोह बड़ा फ़रेबी[66] बेशक अल्लाह

عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَ يَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ؕ وَ

के पास है क़ियामत का इ़ल्म[67] और उतारता है मींह और जानता है जो कुछ माओं के पेट में है और

مَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ؕ وَ مَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ

कोई जान नहीं जानती कि कल क्या कमाएगी और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन में

تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝۳۴ ع

ركوع ۱۳

मरेगी बेशक अल्लाह जानने वाला बताने वाला है[68]

थे जिन्हों ने अ़ह्द वफ़ा न किया, उन की निस्बत अगले जुम्ले में इर्शाद होता है। **62 :** या'नी ऐ अहले मक्का ! **63 :** रोज़े क़ियामत हर इन्सान नफ़्सी नफ़्सी कहता होगा और बाप बेटे के और बेटा बाप के काम न आ सकेगा, न काफ़िरों की मुसल्मान औलाद उन्हें फ़ाएदा पहुंचा सकेगी न मुस्लमान मां बाप काफ़िर औलाद को। **64 :** ऐसा दिन ज़रूर आना और बअ़्स व हि़साब व जज़ा का वा'दा ज़रूर पूरा होना है **65 :** जिस की तमाम ने'मतें और लज़्ज़तें फ़ानी, कि इन के शेफ़्ता हो कर ने'मते ईमान से मह़रूम रह जाओ **66 :** या'नी शैत़ान दूरो दराज़ की उम्मीदों में डाल कर मा'सियतों में मुब्तला न कर दे। **67 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ारिस बिन अ़म्र के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर क़ियामत का वक़्त दरयाफ़्त किया था और येह कहा था कि मैं ने खेती बोई है ख़बर दीजिये मींह कब आएगा और मेरी औ़रत ह़ामिला है मुझे बताइये कि उस के पेट में क्या है लड़का या लड़की ? येह तो मुझे मा'लूम है कि कल मैं ने क्या किया, येह मुझे बताइये कि आयिन्दा कल को क्या करूंगा ? येह भी जानता हूं कि मैं कहां पैदा हुवा, मुझे येह बताइये कि कहां मरूंगा ? इस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **68 :** जिस को चाहे अपने औलिया और अपने मह़बूबों में से उन्हें ख़बरदार करे। इस आयत में जिन पांच चीज़ों के इ़ल्म की ख़ुसूसिय्यत अल्लाह तबारक व तआ़ला के साथ बयान फ़रमाई गई उन्हीं की निस्बत सूरए जिन्न में इर्शाद हुवा "عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ" ग़रज़ येह कि बिग़ैर अल्लाह तआ़ला के बताए इन चीज़ों का इ़ल्म किसी को नहीं और अल्लाह तआ़ला अपने मह़बूबों में से जिसे चाहे बताए और अपने पसन्दीदा रसूलों को बताने की ख़बर ख़ुद उस ने सूरए जिन्न में दी है। ख़ुलासा येह कि इ़ल्मे ग़ैब अल्लाह तआ़ला के साथ ख़ास है और अम्बिया व औलिया को ग़ैब का इ़ल्म अल्लाह तआ़ला की ता'लीम से ब त़रीक़े मो'जिज़ा व करामत अ़त़ा होता है, येह इस इख़्तिसास के मुनाफ़ी नहीं और कसीर आयतें और ह़दीसें इस पर दलालत करती हैं। बारिश का वक़्त और ह़म्ल में क्या है और कल को क्या करे और कहां मरेगा इन उमूर की ख़बरें ब कसरत औलिया व अम्बिया ने दी हैं और क़ुरआनो ह़दीस से साबित हैं। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की और ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की और ह़ज़रते मरयम को ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की ख़बरें दीं तो उन फ़िरिश्तों को भी पहले से मा'लूम था कि उन ह़म्लों में क्या है और उन ह़ज़रात को भी जिन्हें फ़िरिश्तों ने इत्तिलाएं दी थीं और उन सब का जानना क़ुरआने करीम से साबित है तो आयत के मा'ना क़त़्अ़न येही हैं कि बिग़ैर अल्लाह तआ़ला के बताए कोई नहीं जानता। इस के येह मा'ना लेना कि अल्लाह तआ़ला के बताने से भी कोई नहीं जानता मह़ज़ बात़िल और सदहा आयात व अह़ादीस के ख़िलाफ़ है। (خازن، بیضاوی، احمدی، روح البیان وغیرہ)

www.dawateislami.net